भारत सरकार

शिक्षा मंत्रालय

उच्चतर शिक्षा विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या-5784

उत्तर देने की तारीख-30/03/2026

विश्वविद्यालयों में बौद्ध अध्ययन को मुख्यधारा में लाना

†5784. श्री जगदम्बिका पाल:

श्री अनुराग सिंह ठाकुर:

क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) ढांचे के अंतर्गत देशभर के विश्वविद्यालयों में स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी स्तरों पर बौद्ध अध्ययन को एक औपचारिक विषय के रूप में मुख्यधारा में लाने के शैक्षणिक, सांस्कृतिक और राजनयिक महत्व से अवगत है, क्योंकि भारत बौद्ध धर्म की जन्मस्थली और प्रमुख बौद्ध विरासत स्थलों का केंद्र है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या सरकार ने केंद्रीय और राज्य विश्वविद्यालयों में समर्पित संकाय पदों, अनुसंधान अध्येताओं और प्रत्यायन ढांचे के प्रावधानों सहित पाली भाषा, बौद्ध दर्शन, तिब्बती अध्ययन, पुरातत्व, बौद्ध कला, विरासत संरक्षण और नीतिशास्त्र जैसे क्षेत्रों को कवर करने वाले बौद्ध अध्ययन के लिए एक मानकीकृत पाठ्यक्रम तैयार किया है या विकसित करने का विचार है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या सरकार ने शैक्षणिक अनुसंधान को बौद्ध सर्किट पहल के साथ एकीकृत करने और बौद्धनय को आगे बढ़ाने के लिए लाइब्रेरी ऑफ तिब्बतन वर्क्स एंड आर्काइव्स जैसे संस्थानों का लाभ उठाने हेतु सिद्धार्थनगर-कपिलवस्तु-श्रावस्ती-कुशीनगर बेल्ट में और 14वें दलाई लामा के निवास स्थान धर्मशाला में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, बौद्ध अध्ययन पीठ या अंतर-विश्वविद्यालय कंसोर्टियम स्थापित किया है या स्थापित करने का विचार है;

(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं; और

(ङ.) संकाय विकास, भाषा प्रशिक्षण, श्रीलंका, जापान, थाईलैंड, भूटान और म्यांमार जैसे बौद्ध देशों के साथ अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिए सरकार द्वारा क्या पहल की गई हैं?

उत्तर

शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री

(डॉ. सुकान्त मजूमदार)

(क) से (ङ): भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 बनाई है जिसका उद्देश्य भारतीय ज्ञान प्रणालियों (आईकेएस) के एकीकरण और संवर्धन पर जोर देते होते हुए एक समग्र और बहु-विषयक शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देना है। यह नीति पाठ्यक्रम में भारतीय परंपराओं और पद्धतियों को शामिल करने का प्रावधान करती है, उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में बहु-विषयक दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है जिससे

विश्वविद्यालयों को पूरे देश में स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी स्तरों पर विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रस्तुत करने में मदद मिलती है। इसके अलावा चूंकि "शिक्षा" विषय भारत के संविधान की समवर्ती सूची के अंतर्गत आता है इसलिए शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना और प्रबंधन का कार्य केंद्र और राज्य दोनों सरकारों द्वारा किया जाता है।

एनईपी 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने स्नातक कार्यक्रमों के लिए पाठ्यक्रम और क्रेडिट ढांचा (सीसीएफ-यूजी) को अधिसूचित किया है और उच्चतर शिक्षा के पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान प्रणालियों को शामिल करने के लिए दिशानिर्देश जारी किए हैं।

इसके अलावा दिल्ली विश्वविद्यालय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय और सिक्किम विश्वविद्यालय जैसे कई केंद्रीय विश्वविद्यालयों में 'बौद्ध अध्ययन' विभाग हैं जो बौद्ध अध्ययन में विभिन्न यूजी, पीजी और शोध कार्यक्रम संचालित करते हैं।

उपर्युक्त के अतिरिक्त संस्कृति मंत्रालय के अधीन संस्थान बौद्ध अध्ययन के अकादमिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं जैसे नव नालंदा महाविहार, बिहार; केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान (सीआईएचटीएस), सारनाथ, वाराणसी; केंद्रीय हिमालयी संस्कृति अध्ययन संस्थान (सीआईएचसीएस), अरुणाचल प्रदेश और केंद्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान (सीआईबीएस), लेह, लद्दाख।

i. नव नालंदा महाविहार, नालंदा, बौद्ध अध्ययन, पाली, संस्कृत और संबंधित विषयों में स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी स्तरों पर कार्यक्रम संचालित करता है जिसमें बौद्ध दर्शन और बौद्ध पर्यटन प्रबंधन में विशेष पाठ्यक्रम भी शामिल हैं।
ii. केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान (सीआईएचटीएस), सारनाथ, वाराणसी जो एक 'सम विश्वविद्यालय है, नालंदा परंपरा पर आधारित स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट स्तरों पर व्यवस्थित कार्यक्रम प्रदान करता है। संस्थान की पाठ्यक्रम संरचना में बौद्ध दर्शन संकाय शामिल है जिसमें भारतीय बौद्ध दर्शन के साथ-साथ तिब्बती परंपराओं की प्रमुख धाराएँ जैसे कि न्यिंग्मा, काग्यू, साक्या, गेलुग और बोन—भी सम्मिलित हैं।
iii. केंद्रीय हिमालयी संस्कृति अध्ययन संस्थान (सीआईएचसीएस), अरुणाचल प्रदेश, बौद्ध और हिमालयी अध्ययन में भी कार्यक्रम संचालित करता है जिसमें बौद्ध दर्शन, तिब्बती अध्ययन और सांस्कृतिक परंपराओं को शामिल करने वाला एक व्यवस्थित पाठ्यक्रम होता है.
iv. केंद्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान (सीआईबीएस), लेह, लद्दाख बौद्ध दर्शन, तर्कशास्त्र और संस्कृति के अध्ययन को बढ़ावा देता है साथ ही संस्कृत, पाली और भोटी जैसी शास्त्रीय भाषाओं की शिक्षा भी प्रदान करता है।

उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, एनईपी 2020 के विज़न के अनुरूप 'सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा पर राष्ट्रीय मिशन' (एनएमईआईसीटी) को भी लागू करता है। इस योजना का उद्देश्य शिक्षा की सभी प्रक्रियाओं में आईसीटी की क्षमता का लाभ उठाना और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से अधिगम के संसाधन उपलब्ध कराना है। एनएमईआईसीटी योजना के तहत 'स्टडी वेब्स ऑफ़ एक्टिव

लर्निंग फ़ॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स' (स्वयम) प्लेटफ़ॉर्म पर प्रमुख संस्थानों द्वारा तैयार की गई सामग्री उपलब्ध है। यह सामग्री "कोई भी, कहीं भी, कभी भी" अधिगम के दृष्टिकोण के साथ निःशुल्क उपलब्ध है। इस प्लेटफ़ॉर्म के अंतर्गत बौद्ध अध्ययन के लिए चार पाठ्यक्रम प्रस्तुत किए गए हैं जिनके नाम हैं: भारतीय बौद्ध धर्म का इतिहास, अभिधम्म (पाली), बौद्ध दर्शन और बौद्ध पर्यटन; और वर्ष 2023 से अब तक इन पाठ्यक्रमों में 30,000 से अधिक नामांकन प्राप्त हुए हैं।

*****